B.M.A College Baheri Darbhanga (L.N.M.U)
BA (Hons) Part-1 पेपर-1
Dr Manoj Kumar Sah
Deptt of Pol-Sci

Date 12/8/20

प्रजातंत्र का विरोध

फ्रांस न्यूमैन ने अपनी पुस्तक 'दि डैमोक्रेटिक एण्ड दि अथॉरिटेरियन स्टेट' में सत्तावादी को प्रजातंत्र का विरोधी बतलाया है। इस कथन में सत्यता नहीं है। प्रजातंत्रात्मक शासन सत्तावादी और सत्तात्मक होता है। सत्ता को यूनेस्को प्रतिवेदन में इस प्रकार परिभाषित किया गया है कि यह स्वीकृत सम्मानित, अभिज्ञापित और औचित्यपूर्ण शक्ति का नाम है। इस प्रकार यह उपहासात्मक प्रतीत होता है कि जब सत्ता का मूल अर्थ स्वीकारात्मक समझा जाता है तब उसी से निर्मित सत्तावाद को बुरा क्यों माना जाता है। प्रजातंत्र शक्ति को सत्ता में परिवर्तित करनेवाला विचारवाद है। शरटोरी के अनुसार प्रजातंत्रात्मक व्यवस्था में शक्तिधारक को सत्ताधारक की संज्ञा दी जाती है। अतएव सत्तात्मकवाद व्यवस्था कदापि भी घृणा का विषय नहीं माना जाना चाहिए यह तो घृणा का विषय उसी अवस्था में बन सकता है जब निम्नलिखित परिस्थियों में से कोई परिस्थिति उत्पन्न हो जाते है

(1) सत्ता के आधारों के सम्बंध में शंका उत्पन्न हो जाये और सत्ताधारी दमनात्मक शक्ति का प्रयोग करने लगे।
(2) स्वतंत्रता को ही अराजकता का पर्याय मान लिया जाये
(3) सत्तारूढ व्यक्ति से किसी विशेष प्रकार के कार्य किये जाने पर असहमति प्रकट की जाये।

उपरोक्त अवस्था में उन्हें सत्तात्मकवादी कह कर पुकारा जाता है और उनके व्यवहार तथा शासकीय प्रक्रियाओं को अप्रजातंत्रात्मक माना जाता है। पर इसके विपरीत, सत्तापूर्ण अथवा आधिकारिक कार्यों को स्पष्ट प्रजातंत्रात्मक माना जाता है।